Q. 1830 ई० की फ्रांसीसी क्रांति के कारणों पर प्रकाश डालें?

Ans:- 1830 से पूर्व फ्रांस में राजसत्तावादियों का ~~प्राधान्य~~ प्राधान्य था। धीरे-धीरे इनकी प्रतिक्रियावादी एवं अत्याचारी नीति का विरोध बढ़ता जा रहा था। 1824 ई० में लुई XVIII की मृत्यु हो गई, उसके बाद उसका भाई "आर्टेल का काउन्ट" चार्ल्स दशम के नाम से फ्रांस की राजगद्दी पर बैठा। चार्ल्स दशम के गद्दी पर बैठते ही फ्रांस की राजनीतिक स्थिति ने पुनः एक गम्भीर मोड़ लिया। चार्ल्स दशम कट्टर राजतंत्रवादी पार्टी का नेता था और इससे किसी भी प्रकार के उदारवादी कार्यों की अपेक्षा नहीं की जा सकती थी। प्रो० डीपीरो के अनुसार, "नया राजा पुराने शासकों का बच्चा था, वह तो यह समझता था कि राज्यक्रांति के बिना प्रकाश को क्रूरता उत्पन्न कर दी है। वह बनवास के बाद उदासीन तो हो गया था, किन्तु बुद्धिमान नहीं बन पाया था, वह पुराने समय की व्यवस्था एवं कानूनों को लागू करने पर तुला हुआ था।"

अतः 1830 ई० की फ्रांसीसी राज्यक्रांति के प्रमुख कारण निम्नलिखित थे:-

(1) चार्ल्स दशम की प्रतिक्रियावादी नीति:- चार्ल्स दशम घोर प्रतिक्रियावादी था। इतिहासकार लिप्सन के अनुसार- "आर्टोइस का चार्ल्स दशवे के नाम पर शासक बनना प्रतिक्रियावाद को प्रेरणा मिलना था। यह नया राजा बहुत आरंभ से ही स्वयं को राजतंत्रवादियों का नेता मानता था।" सिंहासन पर बैठते समय उसने लुई XVIII द्वारा घोषित चार्टर पर चलने की बात कही थी, लेकिन सिंहासन हाथ में आते ही उसकी प्रतिक्रियावादी नीति यथाशीघ्र सामने आने लगी। वह राजा के दैवी-अधिकार के सिद्धांत का समर्थक था। उसका कहना था कि इंग्लैण्ड के राजा की भांति वैध शासक के रूप में रहने की अपेक्षा मैं जंगल में लकड़ी काटना अधिक पसन्द करूँगा।"

(2) चार्ल्स द्वारा चर्च की प्रधानता:- चार्ल्स दशम

चर्च की सत्ता का समर्थक था। वह चर्च के लिए अपना सिंहासन भी छोड़ने को तैयार था। वह चाहता था कि चर्च और राज्य एक हो जाये। वह चर्च की शक्ति को पुनः सुदृढ़ करना चाहता था। 1789 ई० की क्रान्ति के दौरान चर्च से शिक्षा देने का जो अधिकार छीन लिया गया था वह अधिकार उसे पुनः दे दिया गया। फ्रांस के विश्वविद्यालय का सर्वोच्च एक पादरी को बनाया गया तथा कैथोलिक धर्म विरोधी अध्यापकों का बहिष्कार किया जाने लगा। चर्च की आलोचना करने वाले व्यक्ति को सात वर्ष के कठोर कारावास के दण्ड देने की व्यवस्था की गई। इसके अतिरिक्त उसने अपने उत्तराधिकारी ड्यूक बोर्दो की शिक्षा के लिए वेरे नामक एक कट्टर कैथोलिक को नियुक्त किया गया जिससे राजकुमार भी कैथोलिक विचारों का बन जाये। जैसा कि वेलिंगटन ने लिखा है कि, "चार्ल्स दशम के सामने जेम्स द्वितीय के पतन का उदाहरण कोई मूल्य नहीं रखता। वह जो राज्य स्थापित करने जा रहा है जो कि पादरियों द्वारा, पादरियों का और पादरियों के लिए है।"

(3) क्रान्ति के सिद्धान्तों तथा मान्यताओं की अवहेलना — चार्ल्स दशम क्रान्ति के सिद्धान्तों तथा जनता के अधिकारों का घोर विरोधी था। प्रारम्भ में उसने मेरी-अन्तायनेत के साथ मिलकर क्रान्ति को दबाने का असफल प्रयास किया था। असफल होने के बाद वह विदेश भाग गया। वहाँ भी वह निरंतर क्रान्ति का विरोध का प्रचार करता रहा, कालान्तर में फ्रांस के सिंहासन पर बैठने के पश्चात् उसने भी फ्रांसीसी क्रान्ति के सिद्धान्तों तथा मान्यताओं का खुलकर विरोध किया। उसने प्रेस की स्वतंत्रता समाप्त कर दी। पत्र-पत्रिकाओं पर भी कड़ा प्रतिबन्ध लगा दिया गया।

(4) राष्ट्रीय धन का अपव्यय :— सिंहासन पर बैठते ही सर्वप्रथम चार्ल्स दशम ने उन कुलीन एवं पादरियों की दयनीय अवस्था पर विशेष

घोषित किया जिनकी सम्पत्ति फ्रांसीसी क्रांति के दौरान छीन ली गई थी। इस प्रकार छीनी गई सम्पत्ति को लुई-XVIII के आज्ञा-पत्र द्वारा वैधानिक रूप से स्वीकार कर लिया गया था, इसलिए कुलीन कुलीन या पादरी इसे पुनः प्राप्त नहीं कर सकते थे। अतः चार्ल्स ने ऐसे कुलीनों एवं पादरियों को मुआवजा देने का निश्चय किया। उसके इस कार्य में राजकीय कोष से एक करोड़ अस्सी लाख फ्रांक खर्च हो गये। इससे राष्ट्र को बहुत हानि हुई, लेकिन इस क्षतिपूर्ति का एक नया तरीका निकाला गया जो चार्ल्स के लिए घातक सिद्ध हुआ। उसने जन साधारण से लिए गये ऋण के सूद की दर पांच प्रतिशत से घटाकर तीन प्रतिशत कर दिया। सूद की दर घटाने से सरकारी बॉण्ड खरीदने वाले मध्यम वर्ग को काफी क्षति उठानी पड़ी। अतः मध्यम वर्ग की आय काफी कम होने से वह सरकार से काफी रुष्ट हो गयी।

(5) उदारवादियों का प्रभाव :- चार्ल्स दशम् के अत्यधिक प्रतिक्रियावादी नीति का परिणाम यह हुआ कि उदारवादियों का प्रभाव उत्तरोत्तर बढ़ता चला गया। इसका स्पष्ट उदाहरण 1827 ई० के आम चुनावों में देखने को मिलता है। इस चुनाव में प्रतिक्रियावादियों ने मतदाताओं पर अनेक प्रकार से दबाव डाला, लेकिन फिर भी राजसत्तावादियों के 125 के जवाब में उदारवादियों को 428 स्थान प्राप्त हुए। इस परिणाम से चार्ल्स X काफी चिन्तित हुआ। अतः उसने चेम्बर को भंग कर दिया। इसके बाद चुनाव पुनः हुआ लेकिन इस बार भी उदारवादियों को ही बहुमत प्राप्त हुआ।

(6) तात्कालिक कारण :- 1830 ई० के क्रांति का तात्कालिक कारण चार्ल्स के सेन्ट क्लाउड का आदेश था। चार्ल्स दशम् ने अपने विरोधियों के प्रभाव को नष्ट करने के उद्देश्य से आदेश आज्ञादेश जारी किया जिसके द्वारा चार दमनकारी कानून लागू किये गये। ये कानून थे :-

① प्रेस की स्वतंत्रता पर प्रतिबंध लगा दिया गया।

② नव-निर्वाचित प्रतिनिधि सभा को उसकी अवधि से पूर्व ही भंग कर दिया गया।

③ सम्पत्ति योग्यता को ऊँचा कर के मताधिकार को अत्यंत सीमित कर दिया गया। इस कानून द्वारा 75 प्रतिशत नागरिक मताधिकार से वंचित हो गये।

④ सेना की कार्यावधि 7 से 5 वर्ष कर दी गई।

अतः चार्ल्स दशम का यह आध्यादेश वास्तव में प्रतिक्रिया की अंतिम सीमा थी। जनता और पत्रकारों ने इस आध्यादेश का प्रबल विरोध किया। उदारवादी, गणतंत्रवादी, मजदूर तथा बोनापार्ट पक्षवाले सब चार्ल्स दशम के विरोधी हो गये। अतः इन चार आध्यादेशों ने फ्रांस की 1830 ई० की क्रांति का विस्फोट कर दिया। चारों ओर क्रांति के नारे लगाये जाने लगे। अन्त में 27 जुलाई को क्रांति प्रारंभ हो गई।